UTILIZATION OF LOANS RECEIVED UNDER U.S. DEVELOPMENT LOAN FUND

546. SHRI SURESH J. DESAI: Will the Minister of FINANCE be pleased to state the extent of loans received by the Government of India under the United States Development Loan Fund which has so far been utilized?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI MORARJI R. DESAI): The total amount of loans sanctioned up-to-date by D.L.F. is Rs. 128.7 crores out of which the utilizations upto 31st August 1960 amount to Rs. 54.7 crores.

दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम

५४७. **श्री नवाबसिंह चौहान :** क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि दिल्ली विश्वविद्यालय ने गत वर्ष यह निर्णय किया था कि विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम हिन्दी बना दिया जायेगा और इस निर्णय को लागू करने के लिये एक समिति भी नियुक्त की गई थी; और

(ख) यदि हां, तो इस समिति के कौन कौन सदस्य हैं और उस निर्णय को लागू करने के लिये उन्होंने क्या क्या कदम उठाये हैं अथवा उठाने का विचार रखते हैं ?

†[MEDIUM OF INSTRUCTION IN DELHI UNIVERSITY

547. SHRI NAWAB SINGH CHAUHAN: Will the Minister of EDUCATION be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the Delhi University decided last year that the medium of instruction in the University would be changed to Hindi and that to implement that decision, a committee was also appointed; and

(b) if so, who are the members of that committee and what steps have been taken or are proposed to be taken by them to implement that decision?]

†[ ] English translation.

शिक्षा मंत्री (डा० कालू लाल श्रीमाली) (क) जी, हां ।

(ख) विवरण संलग्न है ।

विवरण

(ख) इस कार्य का व्यवस्थापन करने के लिये एक समिति नियुक्त की गयी थी जिसमें ये सदस्य हैं:—

१. उपकुलपति—अध्यक्ष ।
२. डा० जी० एन० दत्त—उपाध्यक्ष ।
३. डा० नगेन्द्र ।
४. डा० बी० एन० गांगुली ।
५. डा० पी० माहेश्वरी ।
६. श्री एम० एल० श्रीमाली, विधि संकाय
७. डा० (श्रीमती) एस० एल० भाटिया, चिकित्सा विज्ञान संकाय
८. डा० ए० एन० कपूर, टेकनोलोजी संकाय ।
९. श्री अनिल विद्यालंकार, शिक्षा संकाय ।
१०. श्री एम० एन० चौबे (सचिव) ।
११. डा० विश्वेश्वर प्रसाद ।
१२. डा० आर० एन० राय ।

शिक्षा के माध्यम का परिवर्तन करने के लिये निम्नलिखित बातें आवश्यक प्रतीत होती हैं:—

(१) उपयुक्त पाठ्य पुस्तकों की सुलभता ।

(२) हिन्दी माध्यम से पढ़ा सकने वाले विषयाध्यापकों की सुलभता ।

(३) जिन विषयों पर उपयुक्त और प्रामाणिक पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं उनके लिये पुस्तकों की व्यवस्था ।